मूल्य : 30 रुपये

उद्भावना

जन भावनाओं का साझा मंच

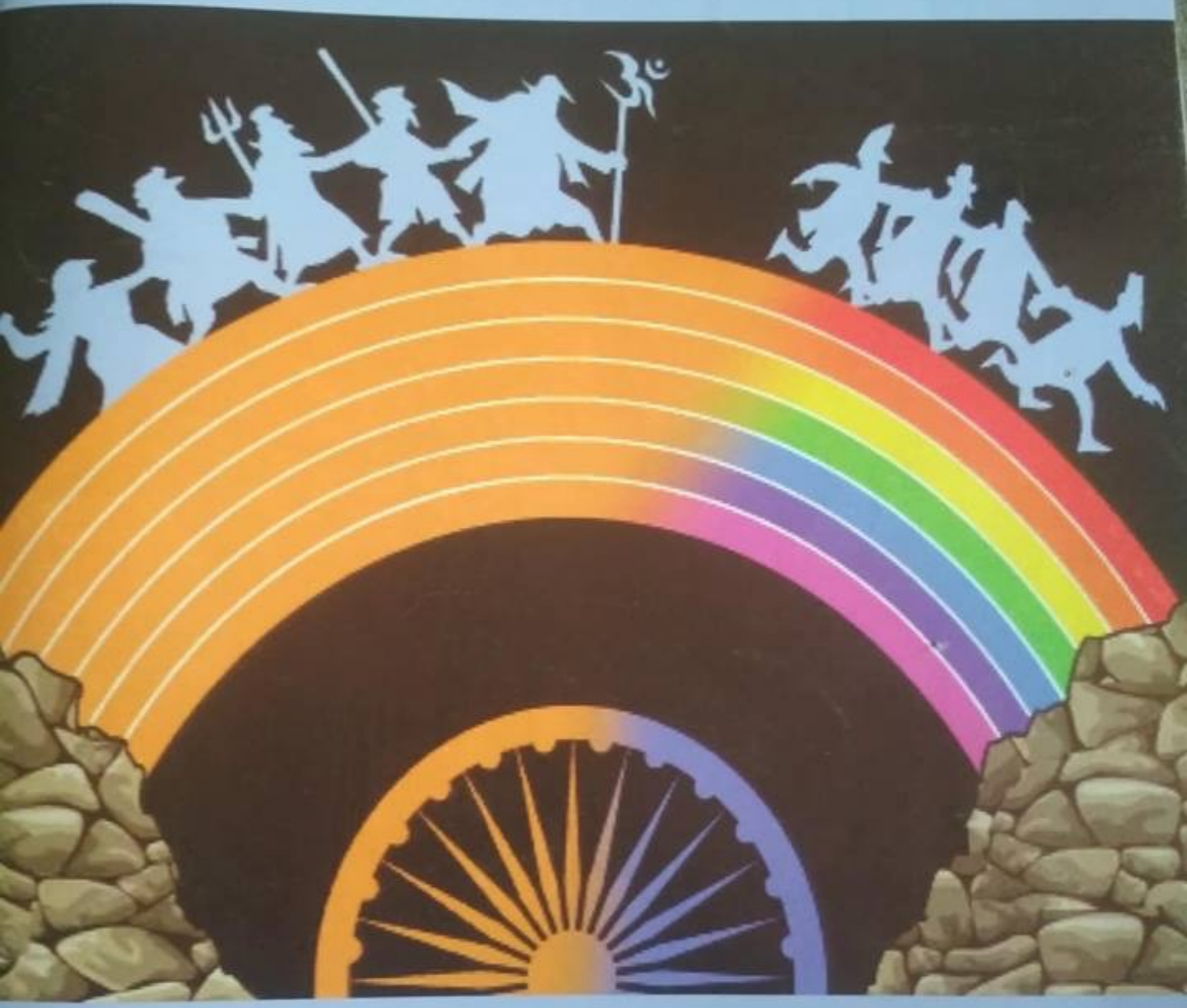

विजय कुमार, राजेश जोशी, नूर ज़हीर, सत्येन्द्र रंजन, मुशर्रफ अली, प्रणव प्रियदर्शी, वीर भारत तलवार, लाल्टू, हरपाल सिंह 'अरुष' प्रद्रीप सक्सेना, विष्णु नागर, दिनेश वैश, ज़की नकवी, बांके बिहारी ददरिया, शहादत, सुरेश सलिल, विमल कुमार, संजय पराते, हरियश राय, कुमार विक्रम, रामकिशोर मेहता, पल्लव, रवीन्द्र त्रिपाठी, प्रियदर्शन व अन्य।

उद्भावना

वर्ष : 33 अंक : 132

अप्रैल-जून 2018

जून 2018 में प्रकाशित

सलाहकार मंडल

असग़र वजाहत, डॉ. राजकुमार शर्मा,
राजेश जोशी, रामप्रकाश त्रिपाठी, रमन मिश्र

संपादक मंडल

अजेय कुमार (संपादक)
हरियश राय (उप संपादक)
मुशर्रफ अली
विनीत तिवारी

सहयोग

रामपाल कटवालया

संपादकीय पता

एच-55, सेक्टर 23, राजनगर, गाजियाबाद

पत्राचार का पता

ए-21, झिलमिल इंडस्ट्रिअल एरिया,
जी. टी. रोड, शाहदरा, दिल्ली-110095
फोन: 22582847, मो. 09811582902
E-mail: udbhavana.ajay@yahoo.com
pd.press@gmail.com

आवरण चित्र : *टाइम्स ऑफ इंडिया* से साभार

सहयोग राशि

वार्षिक	:	300 रु.
संस्थानों से वार्षिक	:	500 रु.
आजीवन (व्यक्ति)	:	3000 रु.
आजीवन (संस्थानों के लिए)	:	5000 रु.
संरक्षक	:	10,000 रु.

सभी मनीआर्डर/चैक/ड्राफ्ट
'उद्भावना' के नाम से पत्राचार के पते पर ही भेजें.
जो हमारे एकाउंट में सीधे जमा करना चाहते हैं,
उनके लिए निम्न सूचना देखें

अकाउंट : UDBHAVANA
एकाउंट न.: 90261010002100
बैंक : सिंडीकेट बैंक
ब्रांच : राजेंद्र नगर, नई दिल्ली-110060
IFSC : SYNB0009026

आजीवन सदस्यों को अब तक छपे सभी उपलब्ध
महत्त्वपूर्ण विशेषांक भेंट स्वरूप दिए जाएंगे

पत्रिका में छपे विचार लेखकों/लेखिकाओं के अपने हैं,
उनसे संपादकीय सहमति होना अनिवार्य नहीं है।

इस अंक में

कहानी

नए इमाम साहब	**शहादत**	7
कैंची चप्पल	**ज़की नक़वी**	47

स्मृति

रज़िया सज्जाद ज़हीर की जन्मशती पर	**नूर ज़हीर**	11
केदारनाथ सिंह की ज़मीन	**विजय कुमार**	16
दूधनाथ सिंह का कहानी संग्रह : सुखान्त	**कैलास जायसवाल**	22
दूधनाथ सिंह की खोज में कविता यात्रा	**राजेश जोशी**	26
अपनी आस्थाओं पर हमेशा अडिग रहे अशोक गुप्ता	**सत्येंद्र रंजन अजेय कुमार**	29 96

आलेख

दलितों पर बढ़ते हमलों की जड़ कहां है	**प्रणव प्रियदर्शी**	35
कृषि को अलाभकारी बनाने की साजिश	**मुशर्रफ़ अली**	38
झूठ, और झूठ--खतरा और भी है	**लाल्टू**	42
जो लोग हिंदू राष्ट्र की बात करते हैं वो भारत को नहीं जानते	**वीर भारत तलवार**	79
शिक्षा का ऐतिहासिक संदर्भ और वर्तमान की चुनौतियाँ	**बांके बिहारी ददरिया**	85
कुबेर तंत्र और उत्तर सत्य	**हरपाल सिंह 'अरुष'**	89

व्यंग्य

ऊँ उथल-पुथलाय नमः	**प्रदीप सक्सेना**	5
जय हिंद के साथ वंदे मातरम	**विष्णु नागर**	10

टिप्पणी

धन-संपत्ति और हिंदुत्व	**उदयन मुखर्जी**	31
सर्जक तथा दर्शक-पाठक के बीच तीसरा क्यों	**दिनेश बैस**	97

फिल्म समीक्षा

राज़ी : रवींद्र त्रिपाठी-107/ बाइस्कोप : प्रियदर्शन-108/
विलेज रॉकस्टार्स : दिनेश श्रीनेत-109

कविताएँ

कुमार विक्रम-32/ शंकरानंद-33/ संजय पराते-45/ सफ़ी अनवर 'सफ़ी'-46/
विमल कुमार-71/ सुरेश सलिल-74/ अशोक सिंह-76/ संतोष कुमार तिवारी-77

पुस्तक समीक्षा

गुजरात पाकिस्तान से गुजरात हिंदुस्तान : हरियश राय-99/ जग दर्शन का मेलाः पल्लव -102/ तुम्हारा गुनहगार : रामकिशोर मेहता-104/ कोई क्षमा नहीं : जगदीश पंकज-105

सांस्कृतिक गतिविधियाँ

प्रलेस, इंदौर-110/ फुले व अंबेडकर जयंती, सिरसा-112/ विश्व पुस्तक दिवस, सिरसा-113/ अट्टहास एवं शांति गया स्मृति सम्मान व लोकार्पण समारोह-114

अन्य : अपनी बात-2/ लघु कथा-88

अपनी बात

हताशा है, निराशा नहीं

आर.के. लक्ष्मण का एक कार्टून याद आ रहा है जिसमें मरीज़ डाक्टर को कहता है, ''मैं आपको डिस्टर्ब नहीं करना चाहता था, जब आप काम कर रहे थे। दरअसल मेरी दूसरी टांग घायल हुई थी, यह नहीं।''

मोदी जी, सुना है, 24 घंटों में 20 घंटे काम करते हैं, परन्तु क्या करते हैं, यह आजतक लोगों को पता नहीं चला क्योंकि जिन बीमारियों से देशवासी जूझ रहे हैं, उनका इलाज नहीं हो रहा–भुखमरी, बेरोज़गारी, शिक्षा, आवास, ढांचागत सुविधाएं इत्यादि। अभी तक तो जनता चुपचाप देख रही थी, जैसा कि वह मरीज़ देख रहा था, कि गलत टांग पर ज़ोर-अज़माइश हो रही है। देखने की बात यह भी है कि मरीज़ ने डाक्टर को टोका नहीं, उसने अपनी गलत टांग की सर्जरी चालू रहने दी, बाद में बतलाया कि सर्जरी तो दूसरी टांग की होनी थी। देश की जनता ने चुपचाप मोदी जी को देश के विभिन्न हिस्सों में भरपूर समर्थन दिया, परन्तु मोदी जी ने अपना ध्यान अंबानी, अडानी इत्यादि के कुबेरतंत्र को बढ़ाने पर ही केन्द्रित रखा। असली बीमारी पर नहीं। टूटीकोरिन के गोलीकांड में कई मासूम मर गए, परंतु प्रधानमंत्री के पास समय नहीं एक बयान देने का।

आज हालात यह है कि जनता का आर्थिक स्तर उसके प्रतिनिधियों के आर्थिक स्तर से बहुत-बहुत नीचे चला गया है। इन अमीर प्रतिनिधियों से आप गरीबों की अपेक्षाओं पर खरे उतरने की उम्मीद कैसे कर सकते हैं? विकास सबका नहीं, केवल इन अमीरों का हो रहा है। फोर्ब्स की पिछली रिपोर्ट में बताया गया है कि पिछले चार दशकों में एक प्रतिशत जनसंख्या की देश की पूंजीगत हिस्सेदारी में 7 से 22 प्रतिशत की वृद्धि हुई है जबकि 50 प्रतिशत लोगों की हिस्सेदारी जो 1980 में 23 प्रतिशत थी, घटकर 2014 में 15 प्रतिशत रह गई। भारत में 1995 में केवल दो अरबपति थे, लेकिन यह संख्या अब सैंकड़े के नजदीक पहुंच गई है। प्रजातंत्र के सभी चार स्तंभों पर इन्हीं लोगों का कब्जा है और मोदी के शासनकाल में यह कब्ज़ा और मज़बूत होता गया है। यहां सवाल मोदी या राहुल गांधी का नहीं है। राजसत्ता ने इन मोदियों व राहुलों को पैदा किया है। इनसे यह उम्मीद करना कि वे भारत में आर्थिक असमानता को दूर करेंगे, मात्र ख्याली पुलाव है। जब तक जनता खुद यह फैसला नहीं करेगी कि उसे इस असमानता को संगठित होकर दूर करना है, तब तक हालात सुधरने वाले नहीं हैं। परंतु जनता को अभी कोई तीसरा आर्थिक विकल्प देनेवाला दिखाई नहीं दे रहा। उसकी उलझन यही है।

पिछले दिनों महाराष्ट्र में किसानों के लांग मार्च ने दिखा दिया कि किसानों को आत्महत्या का रास्ता न चुनकर संगठित होकर सड़कों पर उतरना होगा। जब वे सड़कों पर उतरे तो रास्ते में आम लोगों ने उनके खाने-पीने, उनके पैरों में पड़ रही बिवाइयों का इलाज करने का प्रबंध किया। जनता को जब उम्मीद दिखाई देती है और सही नेतृत्व मिलता है तो वह उठ खड़ी होती है। महाराष्ट्र के मुख्यमंत्री को किसानों की मांगें माननी पड़ीं।

यह प्रश्न स्वाभाविक तौर पर ही उठता है कि क्या ऐसे आंदोलन महाराष्ट्र को छोड़कर अन्य राज्यों में नहीं हो सकते। आज लगभग सभी प्रदेशों में किसान त्रस्त हैं, उन्हें संगठित करने और रास्ता दिखाने वाले, उनके सच्चे हमदर्दों की ज़रूरत है। वाम को इस ओर ध्यान केंद्रित करना होगा।

गाय, सांप्रदायिकता, इतिहास-लेखन, धार्मिक पाखंड, इत्यादि मुद्दों पर वर्तमान सरकार 'हिंदू राष्ट्र' के लक्ष्य से प्रेरित है। मीडिया भी उसकी मदद कर रहा है। पादरी ने क्या कहा, इस पर लंबी-चौड़ी बहसें मिलेंगी, परन्तु एनडीटीवी को छोड़कर अन्य चैनलों के लिए कृषि संकट नाम की कोई चीज़ है ही नहीं। आज जब आर्थिक मुद्दों पर वर्तमान सरकार की विफलता की बात चलती है तो भाजपाई एक ही तर्क देते हैं, पहले वे कान में कहते थे, अब खुल्लमखुल्ला मंच के माइक से कहते हैं कि केवल मोदी ''उन्हें'' सबक सिखा सकते हैं और कोई नहीं। कांग्रेस भी अब अपनी रणनीति बदल रही है। आजकल राहुल गांधी जिस शहर में भी जाते हैं, पहले वे वहां के मशहूर मंदिर में नारियल फोड़ते हैं। गुजरात के चुनाव में तो एक बार भी 2002 का नाम नहीं लिया गया। इसलिए जो लोग यह समझते हैं कि कांग्रेस के साथ मिलकर हम इस देश को ''हिंदू राष्ट्र'' होने से बचा लेंगे, बड़ी गलतफ़हमी में हैं। केवल हिंदुस्तान की जनता में यह ताकत है कि वे मुल्क को दोबारा बंटने न दे। इसके लिए जनता को संगठित करने के अलावा कोई दूसरा विकल्प नहीं।

जब इन तमाम बातों का ज़िक्र अपने मित्रों, जिनमें अधिकतर वाम-हितैषी हैं, के साथ करता हूं तो वे कहते हैं, कि जब तक आप कछुआ-चाल से इस जनता को संगठित करोगे, तब तक दक्षिणपंथी ताकतें जनता को जाति-धर्म की कॉकटेल से अपने वश में कर लेंगी और आप देखते रह जाओगे। जनता के दिलो-दिमाग पर राष्ट्रवाद (हिंदू) का असर धीरे-धीरे बढ़ रहा है। बचपन से ही जब वे दीनानाथ बत्रा द्वारा अनुमोदित पुस्तकें पढ़ेंगे तो वाम तो दूर, लोकतांत्रिक मूल्य भी बच्चों से कोसों दूर होंगे। यह खतरा तो है।

सरकार ने स्कूली पुस्तकों में तब्दीलियां करने के लिए जो न्यास बनाया है, उसकी कुछ सिफारिशें तो दिल दहला देने वाली हैं। जैसे बत्रा जी चाहते हैं कि हिंदी की किताब में यह लिखा जाए कि अमीर खुसरो ने ''हिंदुओं और मुसलमानों के बीच खाई को बढ़ाया''। ग्यारहवीं कक्षा की पाठ्य पुस्तक से एम.एफ. हुसैन की आत्मकथा के अंश हटाने के लिए कहा गया है, कारण यह दिया गया है कि ''सरकार ने इस व्यक्ति की गतिविधियों को देश की एकता और संप्रभुता के लिए खतरा माना था।'' इसी तरह कन्नड़ भक्ति कवि अक्का महादेव एक अध्याय में एक घटना का ज़िक्र करते हैं जिसमें एक औरत विरोध में अपने कपड़े उतार देती है। ''नंगी औरत का वर्णन'' न्यास कहता है, कि ''महिला स्वतंत्रता के नाम पर हिंदू संस्कृति पर हमला है।'' कुछ शब्दों को हिंदी किताबों से निकालने की भी सिफारिशें की गई हैं--बेतरतीब, पोशाक, ताकत, इलाका, अक्सर, ईमान, जोखिम, मेहमान-नवाज़ी, सरे-आम, बदमाश, लुच्चे-लफंगे इत्यादि। और तो और गालिब का मशहूर शे'र 'हमें मालूम है जन्नत की हक़ीकत लेकिन, दिल के बहलाने को गालिब यह ख्याल अच्छा है' को भी हटाने की सिफारिश दी जा चुकी है। क्या इस देश का साधारण नागरिक यह कल्पना कर सकता है कि दसवीं कक्षा की अंग्रेज़ी की पाठ्य पुस्तक में रवीन्द्रनाथ टैगोर के विचारों पर आपत्ति यह कह कर दर्ज की गई है कि इससे ''राष्ट्रवाद और मानवता के बीच भेद पैदा करने की कोशिश की गई है।''

12वीं कक्षा की पॉलिटिकल साईंस की पुस्तक में 2002 में हुए गोधरा कांड का ज़िक्र इन शब्दों में है--"A train caught fire ....on a suspicion that the fire was caused by Muslims". न्यास चाहता है कि "caught fire" की जगह "set on fire" किया जाए और "suspicion" शब्द हटा दिया जाए।

ऐसे भयावह सुझावों व केबिनेट मंत्रियों के मूर्खतापूर्ण बयानों से एक हताशा जरूर पैदा होती है। एक साधारण लिबरल जनवादी व्यक्ति यह सोचने पर मजबूर हो जाता है कि आखिर इसका अंत कहां होगा। कभी-कभी तो मित्रगण यहां तक कह उठते हैं कि कोई भी सरकार, चाहे किसी की हो, इससे बेहतर होगी। इसलिए उनका तर्क यह है कि कैसे भी, इस सरकार को दोबारा चुनकर नहीं आना चाहिए चाहे इसके लिए किसी भी पार्टी, गुट या समूह से हाथ मिलाना पड़े। यह बहस अभी खत्म नहीं हुई है और मुझे लगता है कि यह 2019 के चुनावों तक चलेगी।

मैं पुनः अपनी बात को दोहराना चाहूंगा कि एक बार यह सरकार हट जाएगी तो दूसरी सरकार का एजेंडा कौन तय करेगा। वास्तविक प्रजातंत्र लाने के लिए और जनता के हाथ मज़बूत करने के लिए निचले स्तर पर काम करना होगा। आर्थिक रूप से मज़बूत ताकतों को हर कदम पर टक्कर देनी होगी।

पिछले कुछ महीनों में हमने केदार जी और दूधनाथ सिंह को खोया, साथ में राजकिशोर भी चले गए। जब मेरे लेख 'जनसत्ता' में छपते थे तो राजकिशोर जी का फोन आता था और जब नहीं आता था तो मैं उन्हें फोन करके लेख के बारे में पूछा करता। 'रविवार' में भी मैंने उनके कहने पर ही लिखा। राजकिशोर जी से व्यक्तिगत रिश्ता नहीं था, उनके विचारों से भी पूर्ण रूप से सहमत नहीं हुआ परन्तु उनका एक बड़ा योगदान यह मानता हूं कि वे पत्रकारिता में विचार को अधिक तरजीह देते थे। वे अन्य विचारों की कद्र करना जानते थे। यही कारण था कि उनके मित्रों में तमाम शेड्स के लोग मिलते हैं।

केदार जी के जाने का दुःख इसलिए है कि आज जब अधिकांश लोग एक आधुनिक जीवन जीने की खातिर पैसे की दौड़ में मशगूल हैं और उनके लिए एक-एक मिनट इसलिए कीमती है कि वे इस समय में कुछ कमा लेना चाहते हैं, केदार जी के पास गप्प लड़ाने और अड्डाबाजी करने का पर्याप्त समय रहता था। उनका बात करने का ढंग बहुत आकर्षक था। एक बार मैं अपनी कार में उन्हें उद्भावना के कार्यक्रम में हिस्सा लेने के लिए दिल्ली से अलीगढ़ ले गया, पूरे रास्ते वे बातें करते रहे, नींद लेने या सुस्ताने की कोई गुंजाइश नहीं। दरअसल ये लोग गप्पबाज़ी के स्वर्णयुग में पले-बढ़े, 1950 से 1990 तक, जब राजनीतिक उथल-पुथल के साथ सांस्कृतिक आंदोलन भी उभरा और काफी हाउस व चायखाने बहसबाज़ों से खचाखच भरे रहते थे। ऐसा लगता था मानो घर जाने की किसी को कोई जल्दी न हो। आज वाम आंदोलन कमज़ोर पड़ने पर वो बहसबाज़ियां भी हाथ से निकल गईं। केदार जी ने कभी बहस में अपनी आवाज़ ऊंची नहीं की, बातों में मिठास की भीनी-भीनी महक से वातावरण बड़ा सौहार्दपूर्ण रहता था। शायद इसका एक कारण यह भी था कि उन्होंने, जहां तक मुझे मालूम है, किसी राजनीतिक दल के साथ अपने स्वार्थ नहीं जोड़े। प्रायः कड़वाहट तब पैदा होती है जब आपको राजनीतिक दल से जुड़े होने के कारण उसके गलत काम को भी सही कहना पड़ता है। उम्र में मुझसे काफी बड़े थे, परंतु हमेशा दोस्ताना बनाए रखा। दिल्ली शहर ने ही नहीं, बनारस, भोपाल, कोलकाता, और वे सब जगह जहां उनका आना-जाना रहता था, ने एक अभिन्न मित्र खो दिया है।

यह अंक एक बार फिर देरी से निकल रहा है। पाठकगण अपनी प्रतिक्रिया देंगे।

आपका

25 जून, 2018 **अजेय कुमार**

क्या मुझे अपने भारतीय होने पर गर्व है?

☐ **खुशवन्त सिंह**

मैं हिन्दुस्तानी क्यों हूं? इसलिए कि इस मामले में मुझ से पूछा ही नहीं गया। मैं तो हिन्दुस्तानी ही पैदा हुआ हूं। अगर ईश्वर ने मुझ से इस मामले में मेरी राय ली होती तो मैं ऐसे देश को चुनता जो अधिक धन-वैभव वाला होता, जहां भीड़-भाड़ कम होती, खाने और पीने पर कम प्रतिबन्ध होते, जहां लोगों के व्यक्तिगत मामलों से किसी को लेना-देना न होता और जो धार्मिक कट्टरता से मुक्त होता। क्या मुझे अपने भारतीय होने पर गर्व है? वास्तव में इस प्रश्न का उत्तर मैं नहीं दे सकता। अपने पूर्वजों की उपलब्धियों का श्रेय लेना मेरे लिए बहुत कठिन है। और आज हम जो कुछ कर रहे हैं, उसमें भी मेरे पास गर्व करने के लिए कुछ ख़ास नहीं है। सभी पक्षों पर विचार करने के बाद मैं तो यही कहूंगा, ''नहीं, मुझे हिन्दुस्तानी होने पर गर्व नहीं है।''

पूछा जा सकता है, ''तुम देश से बाहर जाकर किसी दूसरे देश में क्यों नहीं बस गए?'' मैं एक बार फिर यही कहूंगा कि मुझे चुनने का मौका ही नहीं मिला। जिन देशों में रहना मुझे पसन्द है उन सभी में प्रवासियों के लिए बहुत सीमित कोटा है। मेरी पसन्द के अधिकतर देशों में गोरे लोग रहते हैं जो कालों के बारे में पूर्वाग्रह से ग्रस्त हैं। इसलिए भी हिन्दुस्तान में ही मुझे अधिक शांति मिलती है।

मुझे अपने देश की बहुत सी बातें अच्छी नहीं लगतीं और यहां की सरकार तो मुझे बिल्कुल भी पसन्द नहीं है। मैं जानता हूं कि सरकार और देश अलग-अलग होते हैं, लेकिन हमारे यहां सरकार हमेशा ही देश का रूप धारण करने की कोशिश करती रहती है। इसी देश से मेरा सम्बंध है, यहीं मुझे जीना है और यहीं मरना है। बेशक मैं विदेश जाना चाहता हूं। वहां जीना बहुत आसान है, शराब और खाने बहुत अच्छे होते हैं, महिलाएं खुलकर सामने आती हैं वहां रहने में बहुत मजा है। लेकिन इन चीजों से मैं बहुत जल्दी उक़ता जाता हूं और वापस अपने गोबर के ढेर पर, अपने शोर मचाने वाले, पसीने में चिपचिपाते, गंधाते देशवासियों के पास जाने का मन करने लगता है। इस मामले में मैं अपने उन रिश्तेदारों की तरह हूं जो अफ्रीका, इंग्लैण्ड तथा अन्य देशों में रहते हैं। दिमाग कहता है कि विदेश में रहना बेहतर है, पेट कहता है कि 'फॉरेन' में रहने से ज्यादा तृप्ति मिलती है, लेकिन दिल कहता है कि 'वापस हिन्दुस्तान चलो'।

मैं जब भी हिन्दुस्तान वापस लौटता हूं और कार से शहर की तरफ चलता हूं तो सान्ताक्रूज हवाई अड्डे से शहर तक सड़क के किनारे पंक्तिबद्ध बैठे हुए खुले में शौच करने वालों द्वारा फैलाई जाने वाली बदबू से मेरा सामना होता रहता है, उस समय मैं अपने आप से कहता हूँ :

'यहां ऐसा आदमी सांस ले रहा है, जिसकी आत्मा मर चुकी है
जिसने अपने आप से कभी नहीं कहा कि
यह मेरा देश है, मेरी मातृभूमि है।'

ऐसे में, सांस लेना मेरे लिए मुश्किल हो जाता है, फिर भी मैं चिल्लाता हूं, ''यही है, यही है मेरी मातृभूमि, मुझे यह बिल्कुल भी पसन्द नहीं, फिर भी मैं इसे प्यार करता हूं।''

पूछा यह भी जाता है, ''तुम हिन्दुस्तानी पहले हो और पंजाबी या सिख बाद में? या मामला इसके बिल्कुल विपरीत है?'' जिस तरीके से ऐसे सवाल पूछे जाते हैं वह मुझे पसन्द नहीं। लेकिन इतना कह सकता हूं कि अगर मुझे मेरी पंजाबियत और अपने समुदाय की परंपरा से वंचित कर दिया जाएगा तो मैं अपने आपको हिन्दुस्तानी कहने से इन्कार कर दूंगा। मैं हिन्दुस्तानी, पंजाबी और सिख हूं। और यह होने पर भी मेरा उस व्यक्ति से देशभक्ति वाला रिश्ता है, जो कहता है कि ''मैं हिन्दुस्तानी, हिन्दू और हरियाणवी हूं'' या ''मैं हिन्दुस्तानी, मोपलाह मुस्लिम और मलियाली हूं''।

मैं अपनी धार्मिक तथा भाषायी पहचान को किसी भी प्रकार से अनन्य बनाए बिना इसे बनाए रखना चाहता हूं।

मुझे इस बात पर विश्वास नहीं है कि हमारी गारंटीशुदा विविधता ही हमारी ताकत है। जैसे ही क्षेत्रीय भाषा को एक भारतीय पंथ के नाम पर किसी 'राष्ट्रीय' भाषा अथवा धर्म के पक्ष में समाप्त करने की कोशिश की जाएगी, देश की एकता समाप्त हो जाएगी। हमारी भारतीयता को जब-जब चुनौती दी गई। उस समय हम अपनी भाषायी, धार्मिक तथा आस्था की अनेकों भिन्नताओं के बावजूद अपने देश की रक्षा के लिए एक होकर खड़े हो गए थे। अंतिम विश्लेषण यह है कि सीमाओं का अहसास ही राष्ट्र का निर्माण करता है। हम यह सिध्द कर चुके हैं कि हम एक राष्ट्र हैं।

फिर उन लोगों के हिन्दुस्तानीकरण की बात क्यों हो रही है, जो पहले से हिन्दुस्तानी हैं। अब क्या किसी को यह झूठा दावा करने का कोई अधिकार है कि उसे यह निर्णय करने का अधिकार प्राप्त है कि कौन अच्छा हिन्दुस्तानी है और कौन अच्छा हिन्दुस्तानी नहीं है।

(माई सेंटीमेंटस, 1970 में लिखित)

अंग्रेजी से अनुवाद : **अरशद गौड़**

ए एम यू प्रकरण

ऊँ उथल-पुथलाय नमः।।

□ प्रदीप सक्सेना

हम समय हैं। हमें प्रणाम करो--हम महान हैं। हम मुस्लिम-क्रिश्चियन और कम्युनिस्ट-अरि-जन-मर्दक हैं। भगवान ने हमें आज यह समय दिखलाया है कि जहां एक ज़माने में लोग ऊँ क्रान्तिः क्रान्तिः क्रान्तिः या फिर ऊँ शान्तिः शान्तिः शान्तिः जपते रहे थे, आजकल हमारे प्रताप से ऊँ भ्रान्तिः भ्रान्तिः भ्रान्तिः जप रहे हैं। हम हैदराबाद, जेएनयू, जामिया, इलाहाबाद और ए.एम.यू. जैसे केन्द्रीय विश्वविद्यालयों में वामों, स्त्रियों, दलितों, आदिवासियों और मुस्लिमों के विरोध की पंचाग्नि तप रहे हैं। तुम हमें नहीं जानते; वे भी हमें नहीं पहचानते, ये सब जो हमें नहीं मानते--पंच गव्य की सौगंध--हम इन उच्च शिक्षा-संस्थानों को बरबाद कर देंगे। क्योंकि उच्च शिक्षा ही मूलतः हमारी भारतीय संस्कृति को बरबाद किये दे रही है। ये पढ़े-लिखे गुण्डे तैयार करती है, जो हर बात पर सवाल करते हैं। जबकि इन्हें बात नहीं लात चाहिए। इनकी चाय से भी राजद्रोह की बदबू आती है। इन्हें हम बतायेंगे आज़ादी क्या होती है? सब लोग उठो! घंटा घड़ियाल, चिमटा, शंख और मीडिया-भोंपू बजाओ सब सवालों को कीर्तन सागर में डूबो दो! ये यूनिवर्सिटियां गद्दारों का उत्पादन कर रही हैं।

ज़िन्ना कहाँ है? संसद में, मुम्बई में, अपने हाउस में, म्यूज़ियम में, इतिहास में? यह तो भारत में कई जगह हैं, लेकिन यह एएमयू में क्यों है? क्या कर रहा है 80 साल से वहाँ टँगा-टँगा? पाकिस्तान इसे बहुत प्रिय है। वहाँ के मुसलमानों का तो राष्ट्र नायक है ही--यहाँ भी 15-20 पाकिस्तान बनवा रहा है। हर 10 जिलों पर एक पाकिस्तान! हर ज़िले में 10-10 तालिबान और उनकी नर्सरी के लिए ए एम यू का शताब्दी अभियान! ए एम यू ध्यान रखो हमेशा फल देनेवाला वृक्ष है। जिस जनतंत्र का चलन हमने किया है-- उसकी जड़ें यहां गहरी हैं। इस पेड़ की छाया कर्नाटक तक को ठण्डा किये हुए है।

इतिहास से हम नहीं डरते। इतिहास क्या होता है? जो होता है विकास होता है। वह हम कर रहे हैं। सबका साथ--सबका विकास! बस इन ''सब'' में कम्युनिस्ट और मुसलमान नहीं आ सकते और न वे हिन्दू आ सकते हैं जो कांग्रेस में हैं, सपाई हैं, बसपाई हैं। वे हिन्दू भी नहीं आ सकते जो महाभारत युग में इंटरनेट नहीं देख पाते और सतयुग में विमान नहीं उड़ा पाते। वस्तुतः जो विज्ञान को मानता है, वह पागल है। सबसे बुरा होता है वैज्ञानिक इतिहास! तर्क उससे भी बुरी चीज़ है। मुसलमान और कम्युनिस्ट कभी भारतीय नहीं थे। न हो सकते हैं। यह हमारा मूल विचार है।

पुलिस ने 30-40 विद्यार्थियों का सिर खोल दिया तो क्या हो गया? वह तो युगों से यही करती आयी है। सबके साथ करती है। जिस सिर के अंदर गंदे विचार भरे हों उसे खोला ही जाता है। जिन्ना से ज्यादा गंदा आदमी कोई हो ही नहीं सकता। जो संस्था उसकी तस्वीर लगाती है, वह महागंदी है। देश की और जगहों पर लगी तस्वीरों से उसकी तुलना करना पाप है। देशभक्त हिंदू यह पाप नहीं कर सकते।

सोशल मीडिया-भोंपू मीडिया के आगे क्या बेचता है! मूर्खों शासन चलाने के लिए भारत में एक ही चीज़ काफी है : अनर्गल भाषण! लगातार! लगातार!! है किसी को ऐतराज़? तो बस!

मो. 09259017982

उद्‌भावना कथा-विशेषांक

2019 में प्रकाशित

प्रस्तावित विषय

- वैश्विक परिदृश्य में हिन्दी कहानी
- हिन्दी इतर भारतीय भाषाओं की कहानियां और हिन्दी कहानियां
- दलित आंदोलन का कहानी पर प्रभाव
- कथा आधारित फिल्मों पर आलेख
- ग्राम- बोध की कहानियां
- कहानी के आज के सवालों को लेकर साक्षात्कार
- विज्ञान कथाएँ
- कालजयी कहानियां
- साठ के दशक के बाद की कहानी
- सन दो हजार के बाद का युवा कथा लेखन
- वाम सांस्कृतिक आंदोलन और हिन्दी कथा लेखन
- कहानी के संदर्भ में परिचर्चा
- समकालीन कहानियां

साथियों व लेखकों से अनुरोध है कि अपनी रचनाएं हमें अवश्य भेजें। इस संबंध में विस्तृत पत्र अलग से भेजा जा रहा है।

संपर्क :

हरियश राय

अतिथि संपादक, उद्‌भावना कथा-विशेषांक

फोन : 09873225505 ई-मेल: hariyashrai@gmail.com